30 P
260
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1381/10/71

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं॰ Acc. No. 260

S
17/1

891.431
Ek 1B

ओ३म्

IMPERIAL RECO...
RECEIVED.
30 MAR 1931
DEPARTMENT

बहरों को चेतावनी

260

भारत वीर यतीन्द्र आदि के अनुपम अनशन-
साहस करके दत्त, 'सिंह' का वह अवलोकन,
त्याग मूर्त्तियों का तथैव लख कर तप जीवन,
होते जो न सतर्क अभी तक हृदय हीन जन,
देशद्रोह जो कर रहे तथा हमारे ही धनी।
है यह अन्तिम बार, उन बहरों को चेतावनी॥

सम्बत १९८७ वि

लेखक
एक बेचैन

की:७

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY GOVT. OF INDIA No 260 Date 6.12.71

वन्दे मातरम्

ईश बिनय

इस देशकी हे दीनबन्धो! आप फिर अपनाइये,
भगवान! भारतवर्षको फिर पुण्य भूमि बनाइये।
जड़ तुल्य जीवन आज इसका विघ्न बाधा पूर्ण है;
हे रम्ब! अब अवलम्ब देकर विघ्न हर कहलाइये।
हम मूक किं वा मूढ़ हैं रहते हुये तुझ शक्ति के,
मां ब्राह्मि कहदे अजसे सुख शान्ति फिर सरसाइये
सर्वत्र बाहर और भीतर रिक्त भारत हो चुका,
फिर भाग्य इसका हे विधाता! पूर्व सा पलटाइये।
तू अन्न पूर्णि मां! रमा है और हम भूखों मरें,
कहदे जनार्दन से जगाकर दैन्य दुःख मिटाइये
यह स्टष्टि गौरव गज ग्रसित है ग्रहदशा के ग्राह से
हे भक्त वत्सल! शुभ सुदर्शन चक्र आप चलाइये
मां शङ्करी! सन्तान तेरी हाय! यों निरुपाय हो
श्री कण्ठ से कहदे कि हे हर अब न और सताइये
शून्य श्मशान समान भारत हाय! कब से हो चुका।
आकर कराल विपत्ति विषसे व्योम केश बचाइये।
सम्पूर्ण गुण गौरव-रहित हम पतित अवनत हो चुके,
अब छोड़ निर्गुणता विभो, सत्वर सगुण बन जाइये।

सीता पते! सीतापते!! यह पाप-भार निहारिये,
अवतीर्ण होकर धर्म का निजराज्य फिर फैलाइये।
गोपाल! अब यह चैन की वंशी बजेगी कब कहाँ?
आलस्य से अभिभूत हमको कर्म योग सिखाइये।
जिस वसुमती पर आपने बहु ललित लीलायें रचीं,
करुणानिधी! इस काल उसको यों न आप भुलाइये।
पशु तुल्य परवशता मिटे, प्रकटे यथार्थ मनुष्यता,
इस कूप मण्डूकत्व से परमेश पिण्ड छुड़ाइये।
जीवन गहन बन-सा हुआ है भटकते हैं हम जहाँ,
प्रभुवर! सदय होकर हमें सन्मार्ग पर पहुंचाइये।
वह पूर्व की सम्पन्नता यह वर्तमान विपन्नता,
अब तो प्रसन्न भविष्य की आशा यहां उपजाइये।
वर मन्त्र जिसका मुक्त था परतंत्र पीड़ित है वही,
फिर वह परम पुरुषार्थ इसमें शीघ्र ही प्रकटाइये।
यह पाप पूर्ण परावलम्बन चूर्ण होकर दूर हो,
फिर स्वावलम्बन का हमें प्रिय पुण्य पाठ पढ़ाइये।
'व्याकुल न हो कुछ भय नहीं तुम सब अमृत सन्तान हो,
यह वेद की वाणी हमें फिर एक बार सुनाइये।
यह आर्य भूमि सचेत हो फिर कार्य-भूमि बने अहा!
वह प्रीति नीति बढ़े परस्पर, भीति-भाव भगाइये

किसके शरण होकर रहें ? अब तुम बिना गति कौन है,
हे देव! वह अपनी दया फिर एक बार दिखाइये।
"महाकवि बा० मैथिलीशरण गुप्त"

(दोहा) ईश्वर प्रार्थना

सुमरन कर जगदीश को, गुरु चरनन सिर नाय।
प्रकट करूं निज भाव को हे हरि होहु सहाय ।

जगदीश! यह विनय है, जब प्राण तन से निकलें।
प्रिय देश देश रटते बुलबुल चमन से निकले॥
है आरज़ू हमारी स्वाधीन देश होवे।
मिल जुल के सब रहें सुख नींद बन्धु सोवें।
करने को देश सेवा हम तो वतन से निकले। ज०
जब तक रहें जगत में विचलित न प्रण से होवें।
रिपु का विनाश करके सुख नींद जग में सोवें।
आज़ाद देश होवे यह गुण दमन से निकले
गर जन्म और पाऊं सेवा करूं वतन की,
केवल यही हमारे अब कामना है मन की,
स्वाधीन देश होवे आवाज़ धन से निकले। जग०
मृत देह जब पड़ी हो यह धुन कफ़न से निकले.
उड़ करके देश भर में पावन पवन से निकले
शैदा हुआ है शैदा वाणी गगन से निकले, जग०

किसानों को चेतावनी

जागो ग्रामनिवासी जागो, अब है समय तुम्हारा आया।
तुम तो पहिले थे धनवान, अरु थे लिखे पढ़े विद्वान,
अब तुम हो निर्धन अज्ञान, तुमको ज़ालिम ने लुटवाया। जा
हा! तुम हल बैलों के साथ, भाई डटे रहो दिन रात,
तो भी रहते नंगे गात, तुमने बड़ा दुख है पाया। जागो
ज़ालिम नित्य लगान बढ़ाते, पापी ज़रा नहीं शरमाते,
दुख सब किसान हैं पाते, है यह अंग्रेज़ों की माया। जा०
बनाकर औरों को सरताज, हुये तुम रोटी को मुहताज,
घर में रहा न बिल्कुल नाज, सारा योरुप को भिजवाया। जा०
लूटें वकील भी हुक्काम, पुलिस पटवारी वैद्य तमाम,
छोड़ें भूपति नहीं छदाम, सबने तुम्हें लूटकर खाया। जा
बिछाते हैं कर्ज़े का जाल, बढ़ाकर सूद पै सूद मुहाल,
महाजन कर देते बेहाल, मिली है कानूनों की साया।
कहीं पर पुलिसमैन का जूता, बेंत कहीं है ज़मींदार ने सूता
तुममें तनिक नहीं है बूता, सबने तुमको हाय मिटाया।
चाहते हो जो तुम सुख साज, कायम करो राम का राज
आवो कर्म क्षेत्र में आज, यह है बौद्ध ने फ़र्माया जागो।

भीषण अत्याचार

आपे करके बीराज का बहाना, अब तो करने लगे मालिकाना

मान उनका हमें है घटाना यहां सिक्का स्वदेशी बिठाना
जिसने बर्बाद हमको किया है, अन्न भारत ने उसको दिया है
शर्म आती नहीं आज उनको, माँ ने टुकड़ों से पाला था जिनको
जर्मन जर्मनी ने धावा किया था, साथ उनका हमीं ने दिया था।
कर्ज मांगा गया था हमीं से, वादा उसने किया था तभी से
"जीतें यह जर्मनी की लड़ाई, देंगे तुमको स्वराज्य रे भाई"
उसके एवज में रौलट दिया था, खूब वादे को पूरा किया था
वह तो कहते हमें हैं दिवाना, खूब इन्साफ करते हैं जाना।
मान उनका हमें है घटाना, यहां सिक्का स्वदेशी बिठाना
जिसने बच्चों पै गोली चलाई, कितनी माता निपूती बनाईं॥
जिसने लूटा है भारत हमारा, खून चूसा है मित्रो तुम्हारा।
दुःख अपना अगर हम सुनाते, दुष्ट जेलों में हमको पठाते।
नहीं फ़रियाद सुनते हमारी, हमको कैसे पड़े अब करारी।
नहीं जुल्मों का उनके ठिकाना, है असम्भव सभी को गिनाना
मान उनका हमें है घटाना, यहां सिक्का स्वदेशी बिठाना।
उसने मातायें बहिने हमारी, दुःख सहने को जेलों में डारीं।
पूज्य नेता गये हा पिटाये, कुछ कहें तो जबां को दबाये
उनके जुल्मों को कहां तक गिनाऊं, हैं वे थोड़े जिन्हें कह सुनाऊं
वीर सिंहों को फांसी पै टांगा, गर्चे हक को किसी ने था मांगा
ऐसा अबलों को बेजा सताना, वक्त आता लगेगा पता ना।

मानउनका हमें है घटाना, यहाँ सिक्का स्वदेशी बिठाना।
कहीं धारा चवालिस चलाकर, मुंह में ताले हमारे लगाकर।
कोई बोला उसे झट पकड़कर, किया जेलों में उसको अकड़कर।
वहां खाना न अच्छा खिलाते, मार कोड़ों से चक्की पिसाते।
तजे भोजन करे कोई अनशन, उन्हें क्या है ग़रज़ दे दो तन मन।
चाहते वह दमन से दबाना, तर्ज कैसा है यह चहीं शयाना।
मानउनका हमें है घटाना, यहां सिक्का स्वदेशी बिठाना।
राज्य क़ायम तेरा है यह माना, तूने ज़ालिम यही तो है जाना।
कितने क़ायम जहां में रहे हैं, भूप कितने यहां होगये हैं।
सबका होगा किसी दिन चलाना, क्या तू क़ायम रहेगा दिवाना।
एक ईश्वर तुम्हीं से विनय है, नहीं दुखियों की कोई सुने है।
तू तो मौजूद है सब ठिकाना, फिर भी हमको पड़ा दुख उठाना।
मान उनका हमें है घटाना, यहां सिक्का स्वदेशी बिठाना।
दर्द दिल में सबों के हो पैदा, अर्ज़ करता प्रभू से है शैदा।
करें इमदाद मिलकर के भाई, हो विजय धर्म की यह लड़ाई।
भूला मारग हमें जिन बताया, नाम ज़िन्दों में अपना लिखाया।
प्राण सम पूज्य गांधी हमारे, आज वे जेल में हैं पधारे।
नहीं ज़ालिम जलों को जलाना, बुरा होगा दुखी को रुलाना।
मानउनका हमें है घटाना, यहां सिक्का स्वदेशी बिठाना।
बीड़ा शैदा ने भी है चबाया, है हक़ूकों को जिसने दबाया

उसी ज़ालिम को यहां से भगाना, नहीं आज़िम यहां पर ठिकाना।
या तो आज़ाद भारत करेंगे, वरना हम भी इसी पर मरेंगे।
जोकि तहरीक चलती है भाई, है बिकट शान्तिमय यह लड़ाई।
होगा करके जगत को दिखाना, झूंठा करते नहीं हैं बहाना।
मान दुश्मन का अबतो घटाना, यहां सिक्का स्वदेशी बिठाना।

चर्खा से सुधार

चर्खा कातो तो भारत सुधार होरे, भारत वालों की मिट्टी नरखार होरे
चर्खा कातो तो भारत सुधार होरे
अपना पैसा विदेशों को सब जा रहा, कर लहू का पसीना जो पैदा किया
तन भारत पै उसका निसार होरे। चर्खा कातो तो भारत सुधार होरे
अपने यहां से रुपै में जो जाती रुई, जाके इंगलैंड से की बही होगई
पैसा फिर भी न बिल्कुल उधार होरे, चर्खा कातो तो भारत सुधार होरे
मांगते भीक भारत की है यह दशा, नहीं आती अमीरों को फिर भी दया
उन्हें क्या उनके दूने कहोंकार है, चर्खा कातो तो भारत सुधार होरे।
अपने हाथों बुने अपने घर कात लें, एक धेली का कुर्ता ही वर्षों चले
ऐशो इशरत से दिन अपना पार होरे चर्खा कातो भारत सुधार होरे
जो गया सो गया जो रहा सो रहा, अब भी शैदा का मानो कहा कहा
भारत वालों की मिट्टी नरखार होरे, चर्खा कातो भारत सुधार होरे

हमारा विश्वास

अब ईश ही जगत को पहला रिवाज देगा,

माता वसुन्धरा को सब सार काज देगा।

दुष्टों को नाश करके भक्तों को राज देगा,

वह विश्व का रचैया भारत को नाज़ देगा।

जुल्मों को छोड़ ज़ालिम, नरसिंह गाज देगा

तज सोन बरन की चिड़िया लंदन का बाज देगा

फिर तू न रह सकेगा योरप को भाज देगा,

है स्वराज्य की फ़िकर क्या क़दमों में ताज देगा

मुसलिम भी सम्मिलित हैं मुल्ला नियाज़ देगा,

विश्वास ही हमारा पूरण स्वराज्य देगा।

वह कार्य्य करेंगे जो आत्म समाज देगा,

तन मन करेंगे भेंट, जगदीश लाज देगा।

कर्मवीर गांधी

झंडा स्वराज्य का भारत में फहरा दिया नर हरि गांधी ने,

वीरों का डंका आलम में बजवा दिया नर हरि गांधी ने।

सोते थे पड़े ग़फ़लत की नींद मक्कार लूटते खाते थे,

कर दया दृष्टि जाग्रत हमको करवा दिया नरहरि गांधी ने।

प्रण किया बन्द करदेंगे हम जुल्मों का ढाना भारत में,

जो कुठारस्म था चरखे का चलवा दिया नर हरि गांधी ने।

फिर किये एक हिन्दू मुसलिम सब रगड़ा झगड़ा मिटा दिया,

अब मेल मिलाय भाइयों में करवादिया नरहरि गांधी ने।
क़ानून भंग फिर किया खूब दुष्टों के दिल को दहलाया
मत लेउ बिदेशी वस्तु कोई फ़रमादिया नरहरि गांधी ने।

जेल यात्रा का प्रण।

झण्डा प्यारा तिरंगा उठाकर, होंगे आज़ाद जेलों में जाकर,
अब तो चमका मुक़द्दर का तारा,
रंज ग़म दूर होगा हमारा।
कौमी नारों से दिल को हिलाकर, होंगे आज़ाद जेलों में जाकर
जेल तो है हमें कृष्ण मन्दिर,
वहां पहुंचा हमारा जवाहिर।
सर पै दुश्मन के डंका बजाकर हो आज़ाद जेलों में जाकर
जेल खाने में रहकर के निर्भय,
हम करेंगे स्वकर्तव्य निश्चय।
नाम ज़िन्दों में अब हम लिखाकर, होंगे आज़ाद जेलों में जाकर
जेल में तो रहा दम नहीं है,
फांसी खाने का कुछ ग़म नहीं है।
छोड़ें दुश्मन का बेड़ा डुबाकर, होंगे आज़ाद जेलों में जाकर
जेल तो है हमें तीर्थ प्यारा,
जहां जन्मा था मोहन हमारा।
दुष्ट शासन यहां से मिटाकर, होंगे आज़ाद जेलों में जाकर
शैदा कहता है एबन्धु प्यारो,

दुर्दशा देश की अब सुधारो
अब तो डट जाओ मैदां में आकर, होंगे आज़ाद जेलों में जाकर

हमारी दशा

ऐ अमन वालो बतादो क्या अमन भारत में है,
मरते भूखों अन्न बिन फिर भी दमन भारत में है
चीन का वह यात्री फाहियान जिसका नाम था,
तहरीर उसने था किया यहां सत्यता का काम था।
बहती थीं नदियां दूध की पूरा यहां आराम था,
तारे न लगते थे कहीं परिपूर्ण धन से धाम था।
था गर्व तब इस बात पर, लक्ष्मी भवन भारत में है,
ऐ अमन वालो बतादो क्या अमन भारत में है॥
इस देश को करने विजय जिस दम सिकन्दर था चला
शुकरात ने तब था कहा बतला तो दो मुझ को भला,
मौजूद भारतवर्ष में है जगत की सारी कला,
फिर जीत तुम कैसे सकोगे युद्ध यह उससे भला।
निःशस्त्र और निरस्त्र अब प्रत्येक जन भारत में है,
ऐ अमन वालो बतादो क्या अमन भारत में है।
क्या कहूं मैं हाल अब इस देश का जो हो गया,
संसार का शिरमौर था है भाग्य उसका सो गया,
आमद लुटेरों की हुई और बीज़ दुख का बो गया
हम दीन दुर्बल हो गये हैं सुःख सारा खो गया।

मर रहे हैं अन्न बिन फिर भी अमन भारत में है,
ऐ अमनवालो बतादो क्या अमन भारत में है।

चेतावनी

उठो कर्म वीरो! पड़े सो रहे क्यों?
ये अनमोल घड़ियां कहो खो रहे क्यों?
नहीं वक़्त सोने का भाई रहा है,
करारा भीम अर्जुन की ताकत कहां है।
तुम्हारे बुजुर्गों ने केकर दिखाया,
न सानी विदेशों में है कोई पाया।
ज़माने से भिटना सभी को है भाई,
भला इस कदर देर फिर क्यों लगाई।
ये गलती है तक़दीर को रो रहे क्यों?
उठो कर्म वीरो! पड़े सो रहे क्यों!
महाबीर सन्तान होकर के भाई,
पिया दूध मां का हो देते लजाई।
अहा आज मातायें बहनें तुम्हारी,
लखो युद्ध के क्षेत्र में है पधारी।
न अब भी उठे तो सहस बार तुमको,
है धिक्कार धिक्कार धिक्कार तुमको।
समर क्षेत्र से यों विमुख हो रहे क्यों,
उठो कर्म वीरो पड़े सो रहे क्यों

ये दुनियां के मेला में किसका इज़ारा,
यही जान शैदा ने दिल में विचारा।
बढ़ो वीर आगे डरो मत किसी से,
है जिसने बनाया डरो बस उसी से।
करो काम डटकर न इज़्ज़त कमाओ,
उठो शीघ्र आजाद भारत बनाओ।
हटो शर्म छोड़ो नयन धो रहे क्यों,
उठो कर्म वीरो पड़े सो रहे क्यों।

चेतावनी

माता का मान बढ़ाने को उन भारत के दो लालों ने
बम का गोला फ़ेक दिया सोतों को जगाने वालों ने
फेंक के गोला खड़े रहे, नहि कुछ भी पछाड़ा उन दीना
वह काम किया है भारत में, आदर्श इस समय पर कीना
फिर दड बधाये खड़ा होकर, था प्रसन्नता का पार नहीं
हो जिसके पुत्र स पुत्र सुनो, रुक सकता है उद्धार कहीं
फ़िर गये [illegible] खुश होकर, और समय व्यानों का आया
तब होकर चित्त प्रसन्न अती, शावासें नेयों कमीवा
था नहीं मारना कोई को, ना हमार साथ मन को देते
बस हमें सूचना देनी थी, नहिं देर सबों का कर देते।
अन्याय रास्ता ना छोड़ा, तो शान्ति नष्ट हो जावेगी।
मरदेगी [illegible] लोगों को, नौकर शाही पछितावेगी।
थी करी भलाई वीरों ने, की नौकर शाही बनी रहे।
उसके बदले जेलों भेजा, इन्साफ़ ठीक है कौन कहे।
सह रहे कष्ट वह जेलों में हैं अन्न उन्होंने त्याग दिया॥

तजकर दुनियां के झगड़ों को, उन सच्चा मारग जानलिया
इंसाफ देखकर शैदा को, है याद कसकी बस आई।
जब अन्त समय आजाता है, तो बुद्धि भ्रष्ट होती भाई॥

माताओं
और बहिनों को
चेतावनी

चर्खे से आनन्द होगा

मेरी माताओ चर्खा चला दो, सोते भारत को अब तुम जगादो
तुमने चर्खे को जबसे बिसारा, सुख सम्पति ने कीना किनारा
लाज भारत की अब तो बचादो, मेरी माताओ चर्खा चलादो
जबकि चर्खा चलेथा यहां पर, सर्व आनन्द मय थे जहां पर
अब फिर पहिले समय को बुलादो, मेरी माताओ चर्खा चलादो
अबफिर चरखे से दुश्मन भगादो, जीत बच्चों की अपने करादो
अपनी लड़की व बहुयें सिखादो, मेरी माताओ चर्खा चलादो
चर्खं चर्खे से अब तुम हिलादो, मेनचेस्टर को अब तुम बतादो
कामं मिट्टी में उसका मिलादो, मेरी माताओ चर्खा चलादो
कसम खाकर विदेशी को त्यागो, कोई पहिनो न कपड़ा अभागो

अपने धन औ धर्म को बचादो, मेरी माता औ चर्खा चलादो।
इसमें गौवों की चर्बी लगी है, खून सुअर से तूले रंगी है।
बहिनो इसको तुम फौरन जलादो, मेरी माता औ चर्खा चलादो।
चर्खा चक्र सुदर्शन प्रभू का, डर नहिं तोप मशीनकि धुका
शुद्ध खद्दर को घर ही बनादो, मेरी माता औ चर्खा चलादो।
चर्खा पहिले समय में चलै था, सुख आनन्द कैसा मिले था
वही शैदा को करके दिखादो, मेरी माता औ चर्खा चलादो

पुस्तक प्राप्ति का पताः-

नारायण प्रसाद शैदा

तिलहर

यू० पी०

शाहजहाँपुर जि० यू०पी०